10.	Dainik Jagran, New Delhi	1 September 2009

सिर्फ चार दशक में मरुस्थल बन जाएंगे पंजाब और हरियाणा के उपजाऊ खेत

लद्दाख से लक्षद्वीप तक दिखा चढ़ते पारे का कह

■ प्रणय उपाध्याय, नई दिल्ली

पिछले सौ सालों में भारत के औसत तापमान में आधा डिग्री की बढ़ोतरी लद्दाख से लेकर लक्षद्वीप तक अपना रंग दिखा रही है। लद्दाख की फसलों को अब टिड्डियां खाने लगी है। पांच सालों में केवल लू के थपेड़ों से हजारों लोगों की जानें जा चुकी हैं। यह केवल बानगी है, मौसम के गर्म होते मिजाज की। अगर इसी रफ्तार से धरती की तपन बढ़ती रही तो सिर्फ चार दशकों में पंजाब और हरियाणा के खेतों में मरुस्थलीय झाड़ियां नजर आएंगी। धरती पर बढ़ती तपन और मानसून की बिगड़ती तबियत से मौसम का नाजुक तानाबाना ऐसा लड़खड़ाया है कि पहाड़ से लेकर मैदानों तक इसका असर दिखने लगा है।

वर्ष 2004 से 2007 के बीच 88 हजार से ज्यादा लोगों को प्राकृतिक आपदा ने लील लिया। राष्ट्रीय क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार महज तीन सालों के इस अंतराल में केवल लू ने देश में साढ़े तीन हजार से ज्यादा लोगों की जान ले ली।

गर्मी का आलम यह है कि अब शिमला और मनाली जैसे हिल स्टेशनों पर भी एअर कंडीशनरों

बिगड़ता मौसम-2

- **लद्दाख जैसे ठंडे इलाके में भी पहुंचने लगे हैं टिड्डी दल**
- **प्रकृति के प्रकोप से पिछले पांच सालों में 90 हजार से ज्यादा लोगों की जान गई**

की तादाद बढ़ी है तो दिल्ली में एसी के चलने की अवधि। देश की आबो हवा का ताजा सूरते हाल पेश करती पर्यावरण मंत्रालय की 'स्टेट ऑफ एन्वार्यनमेंट रिपोर्ट-इंडिया 2009' में गर्मी की भयावहता का नजारा पेश करते आंकड़े कहते हैं कि 1998 में अकेले उड़ीसा में लू के कारण 685 लोगों को जान गंवानी पड़ी।

वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ फंड यानी डब्ल्यूडब्लयूएफ के अनुसार बीते कुछ दशकों में चढ़ते पारे के चलते लद्दाख के लोगों को उन दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है जिसकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं थी। पर्यावरण प्रेमी स्तांजिन दोरजाईग्या कहते हैं कि इतिहास में पहली बार बीते तीन सालों से लद्दाख की फसलों को टिड्डी दलों का सामना करना पड़ रहा है जो अब तक केवल मैदानी या अपेक्षाकृत गर्म इलाकों में ही सिमटे हुए थे।

वर्ष 2008 में मौसम के मिजाज पर पुणे स्थित नेशनल क्लाइमेट सेंटर की रिपोर्ट बताती है कि बीता साल 1901 के बाद तेरहवां सबसे गर्म साल था। आईआईटी दिल्ली के प्रो. एसके दास कहते हैं कि 1901 से 2003 के दौरान भारत का सालाना

औसत तापमान 0.5 डिग्री सेंटीग्रेड
तीस सालों में तो न्यूनतम और अधिक
दोनों में वृद्धि दर्ज की गई है।

आंकड़ों के मुताबिक पिछली एक
उत्तर भारत का तापमान दक्षिण के मुक
तेजी से बढ़ा है। पर्यावरणविदों का
मौसम के बदलते मिजाज की हलचल
के पारिस्थितिक तंत्र को भारी नु
सकते हैं। यानी यदि तापमान इसी ते
रहा तो 2050 तक पंजाब और हरियाण
खेत फसल पैदा करने की बजाए
झाड़ियां उगाने लायक बन जाएं
वैज्ञानिक तापमान में इजाफे के लिए
कारण को जिम्मेदार नहीं मानते। वै
लिए सिकुड़ते जंगलों, बढ़ते शहरीक
कार्बन उत्सर्जन सहित अनेक
सम्मिलित असर मानते हैं। बदलते
मौसम के आगे बेबसी का ही असर
भारत में पहाड़ों पर चढ़ी बर्फ की चाद
है। ग्लेशियरों का पिघलना किस तबा
है इसका नमूना मैदानी इलाकों में बा
हो रहे मंजर की शक्ल में नजर आ र